स्त्री होना

गर्व या अभिशाप

समर्थ नारी गौरव

मीनाक्षी सुकुमारन

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

स्त्री होना गर्व या अभिशाप

मीनाक्षी सुकुमारन

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-90995-12-7

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
मोबाईल- 9424765259, 9009465259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail-com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण - मीनाक्षी सुकुमारन 2021
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्युटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY MEENAKSHI SUKUMARAN

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

स्त्री होना गर्व या अभिशाप

बचपन से सुना है एक लड़की का जीवन अपना नहीं होता उसे हमेशा दूसरे के हिसाब से ही जीना होता है, दूसरे के रंग में ढलना पड़ता है, झुक कर रहना होता है तभी घर गृहस्थी चलती है।

कम बोलो, तेज़ नहीं बोलो, ज़ोर से हँसों नहीं, चलते हुए पैरों की आवाज़ न हो, बर्तन खटकने नहीं चाहिए, बहस नहीं करो, सवाल जवाब अच्छी बात नहीं।

उफ्फ्फ बाप रे इतनी बड़ी लिस्ट सिर्फ हम लड़कियों के लिए उस पर हर दम एक ही बात लड़कियां तो पराया धन होती हैं राजा राजवाड़े भी बेटी को घर न रख सके।

इस तरह खिलने से पहले ही मुरझाना सिख लेती हैं लड़कियां, हिम्मत की जगह डर, हँसी की जगह मायूसी, उड़ान की जगह पर कतर दिए जाते हैं कभी पिता, कभी भाई, कभी रिश्तेदार, कभी आस पड़ोस तो कभी समाज आड़े आ जाता है आपकी सोच, समझ, कुछ करने की चाह में।

आज भी कितनी जगह देश में ऐसी हैं जहाँ लड़कियां को होना बोझ माना जाता है तभी तो उन्हें या तो गर्भ में

ही मार दिया जाता है या जन्म के बाद किसी कचरे के डिब्बे में लावारिस छोड़ दिया जाता है।

हैरानी होती है ऐसी सोच और करणी पर की दुनिया चाहे इतनी आगे बढ़ गई सदियां बदल गयीं पर सोच वही की वही दकियानूसी की दकियानूसी। कुछ वर्ग तो आज भी औरत को पैर की जूती ही समझते हैं और उसे दबा कर रखने में विश्वास रखते हैं कहीं गलती से भी वो मुँह न खोले या अपने मन की करने की सोचे भी। वह मानते हैं औरत का काम बस चूल्हा चौका, घर परिवार की देखभाल, पति की ज़रूरत पूरी करना और बस घर की चारदीवारी में अपनी पूरी ज़िन्दगी बिता देना। कुछ मर्द ऐसे भी हैं जो गाली गलौच, मार पीट, शारिरिक शोषण को अपना परम धर्म ही मानते हैं और वो भी चुपचाप सहती रहती है क्योंकि बचपन से घूठी की तरह उसे सीख भर भर के जो पिलाई गई है पति जो कहे उसे मानो, जैसा रखे रहो, जैसा कपड़ा दे पहनो, जिस हाल में रखे उसी में अपनी ज़िन्दगी बिताओ।

इस तरह सदियां बीत गयीं स्त्री भारत की प्रधानमंत्री से लेकर भारत की राष्ट्रपति, चाँद पर हो आयी और चाहे राजनीति हो, वैज्ञानिक, खेल कूद, लेखन, सेना, नौसेना,

वायुसेना, मर्चेंट नेवी, पुलिस, पायलट, अध्यापन, बैंक, मीडिया लॉयर और शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो जहां उसने पुरुषों के बीच अपनी सिद्धहस्तता साबित न की हो फिर भी स्त्री को क्यों उस आदर ,सम्मान से नहीं देखा और समझा जाता जिसकी वो हकदार है बस इसलिए क्योंकि वह एक स्त्री है। कैसा दोगला चलन है न हमारी सोसायटी का एक तरफ नारे, बैनर, आंदोलन चलाएंगे 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' 'नारी को करो सम्मान' पर रोज़ की बढ़ती घटनाएं प्रमाणित करती है समाज और उसका नजरिया कितना सजग है। आज भी दहेज के लिए हत्या, प्रताड़ना, बेटा न दे पाने पर बेटियों की लंबी कतार, मारपीट की घटनाएं, शोषण, बलात्कार, मार काट, अपहरण और न जाने क्या क्या जो अपने आप ही सत्यापित करते हैं समाज और उसमें रहने बनाने वाले लोग कितना आदर, सम्मान देते और करते हैं मासूम बच्चियों और महिलाएं का।

पर स्त्री के लिए स्त्री होना अभिशाप तब बन जाता है जब उसे घर संसार की बेड़ियाँ में बांध बस एक बन्धुआ मजदूर से अधिक कुछ नहीं समझा जाता। वह जी जान लगा देती है घर को बनाने, सजाने, सहेजने और संवारने में

पर बदले में जिस प्यार, सम्मान, साथ, समझ, सहयोग की वो, हाड़ मास की कठपुतली।

कहीं कहीं तो साथ ही छोटी कच्ची उम्र में शादी, मातृत्व का बोझ जहां हाथ में किताबें, कॉपी, खेल खिलौने होने चाहिए वहां रिश्तों और घर के कामों की भट्टी में झोंक दिया जाता है और ज़िन्दगी पर पूर्ण विराम ही लगा दिया जाता है।

कहीं कहीं तो ये भी आम है जहां स्त्री घर के साथ बाहर भी काम करती है और पति होने का दम भरने वाला पतिपरमेश्वर घर में रह बीवी की कमाई पर जुआ, दारू, कबाब, सिगरेट आदि से अपनी ज़िन्दगी ठाठ से जीता है और रात में थकी हारी पत्नी को पूरे दिन की कड़ी मेहनत का इनाम मार पीट या यौन शोषण।

पर कहते हैं न जितना ज़्यादा कसाव उतनी ही धीरे धीरे रस्सी हो या जंजीर पकड़ ढीली होने ही लगती है। ऐसा ही उलटफेर देखने को मिला जब स्त्रियों ने भी इन बेड़ियों को तोड़ पुरुषों से आगे निकलने की होड़ में हर वो रास्ता अपनाया जो उन्हें तेज़ी से बुलंदियों के शिखर पर ले जाये। फिर वो चाहे लैट नाईट पार्टीज़ हों, सिगरेट, शराब, ड्रग्स या

शारिरिक संबध। ऐसे घर, परिवार, रिश्ते बिखरने लगे ज़्यादा से ज़्यादा डाइवोर्स होने लगे और लिव इन रिलेशनशिप का चलन चल पड़ा।

अब ये दौर पतन का भी था जिसने एक सवालिया निशान लगा दिया स्त्री पर की वह भी समझौते के लिए तैयार हो जाएगी।

पर जैसे दो रास्ते होते हैं ऐसे ही स्त्रियां अपनी अपनी राह चलती रहीं एक ने दिया धोखा, तनाव, खुशियां, सुकून जो चंद दिन, महीने या साल टिका और फिर डिप्रेशन, आत्महत्या आदि के केस अधिक सामने आने लगे।

इस तरह स्त्री होना अभिशाप तब बन जाता है जब आप शार्ट कट और समझौता कर लेते हो अपने ज़मीर से। और गर्व होना जब लाख मुसीबतों, रुकावटों के बाद भी अपने सपने सिर उठा कर गर्व से पूरे करते हो पूरे सम्मान से अपने घर हर रिश्ते को सजाते, संवारते हुए।

स्त्री होना गर्व की बात है वह एक बेटी, बहन,पत्नी, बहू, माँ बन न जाने कितने रिश्तों को एक साथ निभाती और संभालती है। साथ ही घर और बाहर की ज़िन्दगी को

भी बखूबी निभाती है। फिर चाहे वो खेत खलिहान हो, मजदूरी, फैक्ट्री में, ऑफिस, अध्यापिका, बैंक, डॉक्टर, नर्स कोई भी कार्य क्षेत्र क्यों न हो स्त्री घर, बच्चों और काम की ज़िम्मेदारी सक्षमता से निभा लेती है। स्त्री जहां बैलगाड़ी हांक सकती है वहीं क्या हाथी, क्या ट्रैक्टर, क्या दोपहिया वाहन, क्या तिपहिया वाहन, क्या कार और क्या हवाई जहाज़ कुछ भी ऐसा नहीं जिसमें वो पीछे या कम हो उसने अपनी मेहनत और हौंसले से ये संभव कर दिखाया है की किसी भी काम, किसी भी क्षेत्र में जहां पुरुषों का वर्चस्व रहा है वहाँ महिलाएं भी पीछे या किसी से कम नहीं। वह भी उतनी ही सक्षम हैं जितने की पुरूष।

आज हम 21वीं सदी में जी रहे हैं जहां आधुनिकता अपनी पूरी पराकाष्ठा पर है सब कुछ आधुनिक मैट्रो लाइफ, लैपटॉप, मोबाइल, इंटरनेट, मीडिया, ट्विटर, फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, मॉल, पिज़्ज़ा, बर्गर ज़िन्दगी एक नए कलेवर में यहां भी स्त्रियों ने इसके साथ बखूबी तालमेल बिठाया है। न ही सिटी लाइफ, न ही शहरों में और न ही गांव में स्त्रियां पीछे हैं इस हाईटेक सेवाओं से उन्होंने भी खुद को इस बदलाव के साथ जोड़ा है। स्त्री चाहे वर्क फ्रॉम

होम करे या बाहर जाकर आज भी उसकी प्राथिमकता पहले घर, परिवार और बच्चे ही रहते हैं। ऐसे में भले ही उसपर दोहरा प्रेशर होता है घर की ज़िम्मेदारी और काम की पर फिर भी वो दोनों में तालमेल बखूबी बिठा लेती है।

ऐसे में बताओ स्त्री होना गर्व हुआ या अभिशाप? कुछ पुरूष प्रधान तत्व, समाज और यहां तक की खुद महिलाएं जो घर की बड़ी बूढ़ी हों या जिनकी सोच, विचार मेल न खाते हों वो भले ही स्त्री को वो समान न, वो साथ, वो सराहना न दे पाते हों जिसकी वो हकदार है। इन सारी परिस्थितियों, बाधाओं, अवहेलना के बावजूद वह आगे बढ़ी है, बढ़ रही है और नित नए आयाम, नित नई ऊंचाईयों को छू रही है सिर्फ अपने विश्वास, लग्न, मेहनत और हौंसले के दम पर। स्त्री न कभी कम थी और न ही रहेगी। जब देश आज़ाद भी नहीं हुआ था तब भी उसने कंधे से कंधा मिला अपना पूर्ण योगदान दिया था एक योद्धा बन फिर चाहे नेतृत्व रहा हो या सेनानी बन अपने प्राणों की आहुति वह कभी पीछे नहीं हटी। देश की आज़ादी पाने में जितना लहू पुरुषों का बहा है उतना ही महिलाओं का भी फिर वह कमतर कैसे हो सकती हैं।

राजनीति के गलियारों से सेना में, पुलिस में, अध्यापन, लेखन या कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं जहां स्त्रियों ने अपना वर्चस्व न बनाया हो। फिर भी ये नियति की वह एक स्त्री है समाज को हज़म नहीं होती वह पूरे दमखम से उसे पीछे धकेलने का प्रयास सदियों से करते आएं हैं करते रहेंगे पर स्त्री जितनी कोमल, विनम्र है वक्त आने पर उतनी ही मजबूत बन सकती है इसमें कोई भी दो राय नहीं। इस बात का लोहा पुरूष भी मानते हैं कुछ स्वीकारते हैं कुछ के आगे अपना अहम उनका ईगो ज़्यादा बड़ा हो जाता है मानने और स्वीकारने में। पर कल कल बहती नदी की तरह अपना रास्ता खुद बनाती स्त्री अपनी राह चलती ही रहती है ।

स्त्री पूरक या प्रतिद्वंद्वी

प्रायः बचपन से ही हमने ये बात अनेको बार सुनी है "जहाँ स्त्री का सम्मान नहीं होता वहाँ देवता भी वास नहीं करते" या फिर "हाय अबला तेरी यही कहानी आँचल में है दूध आँखों में पानी"। या ऐसी अनेको बातें, कहावतें जो स्त्री की दयनीय स्थिति या उसके दर्द को उकेरती हैं। पर जिस तेज़ी से वक्त बदला है और सभ्य कहे जाने वाले समाज मे कहीं भी ऐसी स्थिति नज़र नहीं आती। स्त्री पुरुषों से कहीं आगे निकल चुकी है की कहीं कहीं तो उसके पूरक होने की पहचान भी ढूढ़नी पड़ती है जब परिवार और घर की बात आती है क्योंकि उसे अपनी आज़ादी, अपना स्टेटस, अपना काम सर्वोपरि लगता है। ऐसे में एक प्रतिद्वंद्वी की छवि सी लगती है पुरूष के सामने। वहीं निम्न वर्ग में आज भी स्त्रियां सहमी, दबी सी रहती हैं और पुरूष उन पर अपना वर्चस्व समझते हैं। इस तरह एक ही समाज में हम दो रूप पाते हैं कहीं प्रतिस्पर्धा कहीं समर्पण, कहीं पूरक कहीं प्रतिद्वंद्वी।

बात सिर्फ आपसी तालमेल, समझ की है शायद जो स्त्री पुरूष को एक दूसरे के पूरक या प्रतिद्वंद्वी बनाते हैं। उन्मुक्तता, स्वच्छंदता, खुलापन, लेट नाईट पार्टीज़, शराब, सिगरेट पीना, लिव इन रिलेशनशिप आदि हमें किसी भी तरह पुरुष के पूरक नहीं बनाते सिर्फ एक प्रतिद्वंद्वी ही बनाते हैं जिससे न परिवार संभल पाता है, न घर, न रिश्ते।

इसलिए समय की मांग तो यही है स्त्री पुरूष स्वयं के पूरक बनें न की प्रतिद्वंद्वी जिस से आने वाली पीढ़ी आहत न हो।

मीनाक्षी सुकुमारन

ज़िन्दगी कुछ इस तरह से जीती हूँ

सुनती हूँ सबकी
करती मन की
दुखे न दिल मुझ से कोई
नम न आँख हो मुझ से कोई
इसलिए अक्सर रहती बस खामोश
और रह जाती बात दिल की
दिल में ही
करती यत्न बस इतना
ज़िन्दगी हो छल झूठ से परे
सच और सच्चाई से रहे
महकता दिल और घर आँगन
नहीं आता कपट
नहीं आता चलना चालें
इसलिए अक्सर खा जाती हूँ मात
बनते बिखरते रिश्तों से
अपनी सुविधा अनुसार
रोता है तड़पता है दिल
पर लगा देती हूँ मरहम
उस पर फिर धैर्य की

यूँ जीती हूँ अपनी ज़िन्दगी
कुछ इस तरह
सुनती सबकी करती मन की
न बदलती
न बहलती
बातों के ताने बानों से
माना दिल मासूम है
मेरा पर दिया नहीं हक
कभी किसी को इस से
खेलने का
माना सच है ढाल इसकी
दिया नहीं हक किसी को
इस से खेलने का
दिखती बहुत कमज़ोर हूँ
पर निश्चय की पक्की हूँ
मन की सच्ची हूँ
ज़िन्दगी कुछ इस तरह से जीती हूँ
रोज़ आईने में जब खुद को देखूँ
तो कभी चुरानी न पड़े नज़र
खुद से ही खुद की कभी भी।।

कुछ अलग करते हैं

हर दम रोने की जगह
आज कुछ अलग करते हैं
हर दम शिकायत की जगह
आज कुछ अलग करते हैं
हर दम कलह की जगह
आज कुछ अलग करते हैं
हर दम मीडिया की झिक झिक
हर दिन व्हाट्सएप की कहानियां
आज कुछ अलग करते हैं
हर दिन समाचार में आँखे गड़ाए
समाचारों को नापते तोलते
आज कुछ अलग करते हैं
हर दिन कोसने से आहें भरने से
कुछ अलग करते हैं
हर त्योहार से पहले
उसे मनाना है या नहीं
इस बहसबाज़ी से

कुछ अलग करते हैं
हर मौसम की मार से
कुछ अलग करते हैं
हर विपदा आपदा से
कुछ अलग करते हैं
जब मन में ये ठान लेंगे
तो सोच अपने आप बदलेगी
साथ ही नज़रिया
तो आओ
कुछ अलग करते हैं
खुद से खुद के लिए
तभी कुछ अलग और सही होगा।।

मीनाक्षी सुकुमारन

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

मीनाक्षी सुकुमारन
नोएडा

मैं स्त्री हूँ

बिटिया
बहन
पत्नी
माँ
हर रुप हर रिश्ते
को जिया है पूरे मन से
मुझे गर्व है मैं स्त्री हूँ
जब लगती हूँ माँ के गले
जब बांधती हूँ राखी भाई की कलाई पर
जब भाई दूज पर लगाती हूँ टिका भाई के माथे पर
जब रखती हूँ करवाचौथ पति के लिए
जब रखती हूँ अहोई का व्रत बेटे के लिए
जीती हूँ हर लम्हा हर रिश्ता यूँ पूरे मन से
मुझे गर्व है मैं स्त्री हूँ
तभी तो बन पाई बेटी
बहन, पत्नी और माँ
और रोज जीती हूँ इन रिश्तों को पूरे मन से
नहीं कम किसी भी आशीर्वाद से कम ये अनमोल रिश्ते
जो मिले इस जीवन में
इसलिए मुझे गर्व है मैं स्त्री हूँ।।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
प्रकाशन एवं संस्था – 9424765259

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com
अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/

मूल्य 50/–
978-93-90995-12-7